Seat No. : _______________

XA-119

M.A. Part-II
March-2013

Gujarati (Paper-VII)

(Unseen)

અનુદિત અને અપઠિત

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 100**

સૂચના : બધા પ્રશ્નના ગુણ સરખા છે.

૧. 'મુકામ શાંતિનિકેતન'ના અભ્યાસને આધારે પુ.લ. દેશપાંડેની સર્જક તરીકેની લાક્ષણિકતાઓ નિદર્શનો સાથે જણાવો. ૨૦

અથવા

'લેખ' વિભાગમાં પ્રગટતી રવીન્દ્ર છબી સ્પષ્ટ કરી પુ.લ. દેશપાંડેના સંવેદનવિશ્વનો પરિચય કરાવો.

૨. 'ચેખોવની શ્રેષ્ઠ વાર્તાઓ'ને આધારે ચેખોવની વાર્તાકલાનું મૂલ્યાંકન કરો. ૨૦

અથવા

'છ નંબરનો વોર્ડ' વાર્તાનું મૂલ્યાંકન કરો.

૩. નિબંધ લખો : (**એક** વિશે) ૨૦

(૧) સાહિત્યમાં દલિત ચેતના

(૨) મારો પ્રિય સાહિત્યકાર

(૩) ગુજરાતી સાહિત્યમાં નારીચેતના

(૪) લોકસાહિત્ય

૪. તમારી કૉલેજમાં ઉજવાયેલા માતૃભાષા દિન વિષયક સેમિનારનો અહેવાલ તૈયાર કરો. ૨૦

અથવા

તમારી કૉલેજમાં છેલ્લા વર્ષના વિદ્યાર્થીઓના માનમાં યોજાયેલા વિદાય સમારંભ વિશે અહેવાલ તૈયાર કરો.

૫. નીચે આપેલા શ્લોકનો ગુજરાતીમાં અનુવાદ કરો : ૭

(i) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मीणे ।। १

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ।। २

स्वऽल्पापि दीपक्ज्योतिर् बहुलं नाशयेत् तमः ।
स्वऽल्पोपि बोधो महतीमविद्यां नाशयेत् तथा ।। ३

वंदन प्रसादसदनं सदयं हृदय सुधामुचो वाचः ।
करणं परोपकरणं येषां केषां न ते वन्द्याः ।। ४

અથવા

न चोरहार्यं न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी ।
व्यये कृते वर्धत एक नित्यं,
विद्याधनं सर्व धनप्रधानम् ।। १

परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम् ।
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्सुमहात्मनः ।। २

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः,
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः,
परोपकाराय सतां विभूतयः ।। ३

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः ।
परोपकाराय वहन्ति नद्य ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः
परोपकारार्थमिंद शरीरम् ।। ४

(ii) નીચે આપેલા અંગ્રેજી ફકરાનું ગુજરાતી કરો : ૬

No, no, it is not true After marriage, I started learning designing and till late night I worked which is why I spoiled my eyes. The atmosphere of Bombay did not suit to my body. Due to all these I spoiled my health', Bapuji gave the correct reason. But children never believed him.

Children had no reason to unbelieve this. They all knew that Ba is the living force, the source of inspiration for Bapuji. He studied after marriage and became a respectable man in the society because of Ba. Bapuji respected Ba's word throughout the life. Whenever the children wanted to go on the picnic or to attend musical classes or would like to go out of station, they took Ba's approval first Bapuji could never reject what Ba had accepted. But Hriday many-a-times could hardly comprehend why, though Bapuji always honoured Ba, she scolded him as if he were a kid.

અથવા

Why do we care for literature ? We care for literature primarily on account of its deep and lasting human significance. A great book grows directly out of life; in reading it, we are brought into large close, and fresh relations with life; and in that fact lies the final explanation of its power. Literature is a vital record of what men have thought and felt about those aspects of it which they have thought and felt about those aspects of it which have most immediate and enduring interest for all of us. It is thus fundamentally an expression of life through the medium of language. Such expression is fashioned into the various forms of literary art. But it is important to understand, to begin with, that literature lives by virtue of the life which it embodies. By remembering this, we shall be saved from the besetting danger of confounding the study of literature with the study of philology rhetoric and even literary technique.

(iii) નીચે આપેલા ફકરાનું ગુજરાતી કરો : ૮

हम जब गंगाजी का दर्शन करते हैं, तब हरे-हरे लहलहाते खेत ही हमारे ध्यान में नहीं आते वरन् उनके साथ व्यास, वाल्मीकि के अमर काव्य बुद्ध, महावीर के विहार, अशोक, समुद्रगुप्त या हर्ष सरीखे बड़े सम्राटों के पराक्रम और तुलसी और कबीर जैसे सन्त महात्माओं की साखियाँ भजन - इन सबका स्मरण हो जाता है । गंगा का दर्शन तो शैत्य, पावनत्व का प्रत्यक्ष दर्शन है ।

लेकिन गंगा का दर्शन कुछ एक ही तरह का नहीं है । गंगोत्री के पास बर्फ से ढके हुए प्रदेशों में इसका क्रीडासक्त कन्यारूप उत्तरकाशी की ओर चीड़ देवदार के काव्यमय प्रदेश में मुग्धारूप, देवप्रयाग के पहाड़ी और संकरे प्रदेश में चमकीली अलकनन्दा के साथ इसकी अठखेलियाँ, लक्ष्मणझूले के किकराल दंष्ट्र से छूटने के बाद हरिद्वार के समीप कई धाराओं में विभक्त होकर इसका स्वच्छंद विहार, कानपुर से सटकर जाता हुआ इसका इतिहास प्रसिद्ध प्रवाह, तीर्थराज प्रयाग के विशाल पाट के ऊपर इसकी यमुना के साथ लोक पावन त्रिवेणी संगम होने की शोभा कुछ निराली ही है । एक दृश्य को देखकर दूसरे की कल्पना ही नहीं हो सकती । हर एक का सौंदर्य जुदा, हर एक का भाव जुदा, हर एक का वातावरण जुदा और हर एक का माहात्म्य भी जुदा है ।

प्रयाग गंगा कुछ निराला ही रूप धारण कर लेती है । गंगोत्री से लेकर प्रयाग तक गंगा उत्तरोत्तर बढ़ती हुई भी एक रूप मानी जाती है, किन्तु प्रयाग के पास इसमें यमुना आकर मिलती है । पाट तो पहले से ही दोहरा है । वह खेलती-कूदती है, पर क्रीडासक्त नहीं दिखती और जब गंगा शकुन्तला जैसी तपस्वी कन्या दिखती है, तब काली यमुना द्रौपदी जैसी मानिनी राजकन्या दिख पड़ती है । जब शर्मिष्ठा और देवयानी की कथा सुनते हैं, तब उस समय प्रयाग के समीप गंगा और यमुना का बड़ी कठिनाई से मिलता हुआ शुक्लकृष्ण प्रवाह याद आता है ।